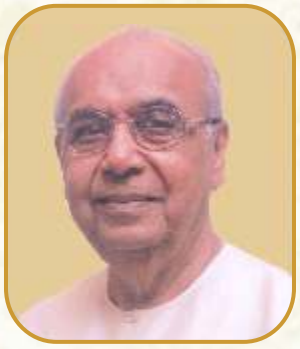

PANDIT ARVIND PARIKH

Pandit Arvind Parikh — the senior-most disciple of Ustad Vilayat Khan — is ranked amongst the top ranking sitar players of India. Having received talim from the legendary Ustad for 60 years, he is a unique product of the Imdadkhani — Etawah Gharana — sometimes called the Vilayatkhani Gharana.

2. Born on October 19, 1927, Pt. Parikh's creative ability and spiritual family background enabled him to add his own personal dimension to the musical philosophy and expression of his traditional Gharana. He has the distinction of authoring two interesting books called "The Raga of My Life" and "The Glorious Tradition of Etawah-Imdadkhani Gharana — The Greats of Seven Generations".

3. Pt. Parikh is a 'Top' grade artiste and a regular broadcaster of All India Radio and Doordarshan. He has been featured at several major music festivals in India and has had very successful concert tours in several parts of Europe, West Asia, Far East and Australia. As a musicologist, teacher and cultural ambassador, Pt. Parikh has participated effectively in successfully heading cultural institutions like Music Forum, Indian Musicological Society (IMS) etc. He achieved high status in the music world being a Trustee of ITC-SRA from its inception and being a Coordinator of All India Musicians' Group (AIMG).

4. Pt. Parikh's appointment as a Vice-President of International Music Council (UNESCO) for the period 1994-97 is indicative of the respect that he commands all over the world.

5. Pt. Parikh has been conferred with several honours and awards including the "Akademi Ratna" award by Sangeet Natak Akademi for the year 2016 and the National Award by Sangeet Natak Akademi for Instrumental music (sitar) for the year 2003, Kumar Gandharva Rashtriya Samman Award in the year 2012 and Gaurav Puraskar by the Gujarat State Sangeet Natak Academy for the year 1997-98.

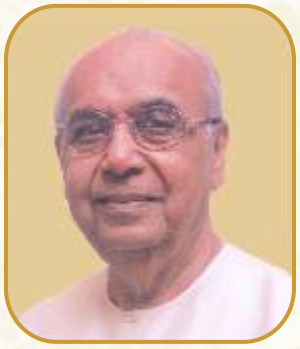

पंडित अरविन्द परिख

पंडित अरविन्द परिख, उस्ताद विलायत खान के वरिष्ठतम शिष्यों में से एक हैं और आपका नाम भारत के शीर्षस्थ सितार वादकों में लिया जाता है। प्रतिष्ठित उस्ताद से 60 वर्ष तक तालीम प्राप्त करने के बाद, आपने इमदाद खानी – इटावा घराना- कभी-कभी विलायतखानी घराना कहे जाने वाली वादन कला के अद्वितीय सितार वादक का दर्जा प्राप्त किया है।

2. आपका जन्म 19 अक्तूबर, 1927 में हुआ था और अपनी सृजनात्मक क्षमता और आध्यात्मिक पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रेरणास्पद गुणों के बल पर आपने संगीत दर्शन और अपने पारम्परिक घराने की अभिव्यक्ति को अपना वैयक्तिक नया अन्दाज दिया। आपको दो रोचक पुस्तकों अर्थात "दि राग आफ माई लाइफ" और "दि ग्लोरियस ट्रेडिशन ऑफ इटावा – इमदाद खानी घराना – दि ग्रेट्स ऑफ सेवन जनरेशन" का लेखक होने का गौरव प्राप्त है।

3. आप ऑल इण्डिया रेडियो और दूरदर्शन के एक शीर्षस्थ एवं महान कलाकार और नियमित प्रसारणकर्ता रहे हैं। आपने भारत में अनेक महत्वपूर्ण संगीत उत्सवों में प्रतिनिधित्व किया है और यूरोप, पश्चिम एशिया, सुदूर पूर्व और ऑस्ट्रेलिया के अनेकानेक भागों में हुए सफल संगीत समारोहों में देश का गौरव बढ़ाया है। एक संगीतज्ञ, शिक्षक और सांस्कृतिक राजदूत के रूप में आपने म्यूजिक फोरम, इण्डियन म्यूजिकल सोसाइटी (IMS) आदि जैसी सांस्कृतिक संस्थाओं का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने में प्रभावकारी भूमिका निभायी है। आपने आई टी सी – एस आर ए की स्थापना से ही उसके ट्रस्टी और आल – इण्डिया म्यूजिशियन्स ग्रुप (एआईएमजी) के सह-संयोजक के रूप में उच्च स्तरीय प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

4. वर्ष 1994 से 1997 तक इन्टरनेशनल म्यूजिक काउंसिल (यूनेस्को) के उपाध्यक्ष के रूप में आपकी नियुक्ति इस सम्मान की परिचायक है कि सारे विश्व में आपके नाम का डंका कायम है।

5. आपको अनेकानेक सम्मानों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें वर्ष 2016 के लिए संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिया गया "अकादमी रत्न" और वर्ष 2003 के लिए वाद्य संगीत (सितार) संबंधी संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिया गया "नेशनल अवार्ड", वर्ष 2012 में कुमार गंधर्व राष्ट्रीय सम्मान अवार्ड और वर्ष 1997-98 के लिए गुजरात राज्य संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिया गया गौरव पुरस्कार शामिल हैं।